सम्पादकीय...

लेखक खातिर भाषा वइसे हउवे जइसे किसान खातिर खेते में खड़ा फसल। हर बाली में कइ गो दाना होला आ बाली एतना होले कि किसान ओके गिन ना सकेला। लेकिन किसान हाथे प हाथ दे के आपन फसल खाली देखल करे त एगो दाना घर में नाहीं आई। फसल काटे के पड़ी, मौंड़े के पड़ी। एतना भइले के बादो ओकर काम खतम नाहीं होला। मांड़ल अनाज के ओसावे के परेला फेर घास-भूसा से ओकरे के अलगावे के परेला। एकरे बाद आटा के पीस-गूँथ के रोटी बनेला। भाषा पर काम करे वाला रचनाकार सबसे ढेर किसान अइसन होला।

गायक के आत्मा लेके जे गूँगा पैदा भइल ओकर जनम बेकार बा। भोजपुरी के रचनाकारन के पास विलक्षण सर्जनात्मक प्रतिभा बा उनके आत्मा भरल बा गीतन से। उनके पास मधुर आवाज भी बा। उ आवाज भोजपुरी के हउवे। संसार के कवनो भाषा के साहित्य के सामने भोजपुरी दुनिया के साहित्य-विशेष रूप से कविता-रखल जा सकेला। अपने लरिकन के हाथ पकरि के गाँव से बड़हन दुनियाँ में भोजपुरी गइल। उहाँ लरिकन के हिन्दी से भेंट भइल। हिन्दी दुसरका हाथ पकरि के वृहत्तर समाज से जोड़लस। भोजपुरी आ हिन्दी-एक दुसरा से अभिन्न हउवे-एगो हमार जन्म देवे वाली माई हउवे त उ दुसरका पाले वाली। हर भाषा के एगो संस्कार होला। भोजपुरी आ हिन्दी के संस्कार सबके सहभागी बनवले के हउवे। एके लिखे आ बोले वाला में इ बोध होला कि जीवन उहे हउवे जवन समाज खातिर कुछ क सके। सामाजिक सहभागिता आ सेवा के संस्कार भोजपुरी के विशेषता हउवे। ई दर्प आ अधिकार के भाषा नाहीं हउवे। इ समन्वय, सद्भाव आ संस्कार के भाषा ह। भोजपुरी लेवे में जेतना उदार हउवे ओसे अधिका देवे में हउवे। दुसरे भाषा के शब्द इ मुक्त होके लेहले बा। लेकिन जेके लेहले बा ओके अपना संस्कार में ढालि के लेहले बा। आपन अस्मिता, आपन सत्ता बचा के लेहले बा। एही तरह से उ देहलउ बा। हिन्दी के शक्ति भोजपुरी, ब्रजी, अवधी आ मैथिली के शक्ति हउवे। आदान-प्रदान के इ भाव भाषा के शक्ति होला, ओकर विकार नाहीं। कवनो भाषा कभी विकृत नाहीं होला, विकसित होला। भोजपुरी के लगे विशाल शब्द भण्डार बा, साहित्य के परम्परा बा, लोक-साहित्य के खजाना बा। उदारता, लचीलापन, समृद्धि, लोक-भावना, जनशक्ति आ भीतर व्याप्त नारायण-भाव से भरल रहले के बावजूद दुसरे भाषन के तुलना में भोजपुरी काहे पिछड़ल बा, सरकार आ साहित्य अकादमी के सूची से इ काहें बाहर बा—एपर विचार होखे के चाहीं।

अपने भोजपुरी में दुसरे भाषा के शब्द आवत बाने अउरी लोग ओके लिखत-पढ़त-बोलत बा त एकर स्वागत होखे के चाही। बदलत रहल भाषा के स्वभाव हउवे। हर पतझर में बृक्ष के हर पत्ता बदल जाला। बृक्ष अपने जगहे पर रहेला। हर साल ओकर कलेवर बदलत जाला, शाखा बढ़त जाले, आकार बढ़त जाला—अउरी पहिले उ फूल से फेर फल से भरि जाला।

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' श्रेष्ठ सर्जनात्मक भोजपुरी साहित्य रउरे लगे पहुँचावे के सङ्कल्प लेत बा। इ कवनो, क्षेत्र वर्ग आ गुट के पत्रिका नाहीं हउवे। इ सबके पत्रिका हउवे। लेखक, कलाकार, पाठक, संस्कृति-कर्मी आ भोजपुरी का प्रेमी के रूप में राउर सहयोग चाहीं। एकरे खातिर हमार नेवता आ प्रणाम स्वीकार करीं। रउरे चिट्ठी आ रचना के प्रतीक्षा रही।

प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय...

रूसी गणराज्य दागिस्तान के एगो छोट हिस्सा में अवार भाषा बोलल जाले। उहाँ रहे वाला आ अपना भाषा से बहुत प्यार करे वाला अबू तालिब एक बेर मास्को कवनो काम से गइलें। सड़क पर कौनो राहगीर से उनका कुछ पूछे के भइल। संजोग से एगो अंग्रेज उनके सामने परि गइल। अवार भाषा ऊ नाहीं जानत रहे। एहलिए अबू तालिब के सवाल ऊ नाहीं बूझि पवलस। अंग्रेजी, फ्रांसीसी आ स्पानी भाषा में ऊ इनसे पूछे लागल कि ऊ का चाहत बाड़े ? अबू रूसी, लाक, दार्गिन, कुमीक आ अवार भाषा में ओके बतावल चहलन लेकिन दुनों एक-दूसरा के नाहीं समझि पवलन। तनी-मनी अंग्रेजी जाने वाला एगो अवारी दुनों के बात सुनत रहे। अबू लगे आके ऊ कहलस कि 'तोहार गँवार भाषा ऊ कइसे समझत ? अंग्रेजी सभ्य लोगन के भाषा ह। ओके सीख लेहले रहतऽ त बात हो गइल रहित।' अबू कहलन कि 'ऊ अंग्रेजवा के विद्वान आ अंग्रेजी के सभ्य भाषा कइसे मान लेवल जाय ? हमार भाषा अंग्रेजी नाहीं ह। आ भाषा कहीं सभ्य आ असभ्य होले ? हमके सभ्य आ सुसंस्कृत अपने भाषा बनावेले। हम ओकर कवनो भाषा नाहीं समझलीं त ऊहो त हमार कवनो भाषा नाहीं बुझलस।' भोजपुरी के मजदूर वर्ग के भाषा कहे वालन के एह पर सोचे के चाहीं। हर भाषा आकाश में चमकत एगो सितारा ह। सबके स्वतंत्र अस्तित्व ह आ कवनों के एक-दुसरा से कवनो संघर्ष नाहीं बा। ई नाहीं होखे के चाहीं कि आकाश के कुल सितारा आधा आकाश के घेरि लेवे वाला बड़का सितारा में मिल के समाप्त हो जायँ। एकरे खातिर सूरज त बटले बा। हर आदमी के आपन सितारा होखे के चाहीं। हमनीं के अपने सितारा भोजपुरी के बहुत प्यार करेलीं आ वैज्ञानिक लोगन के ए बात पर विश्वास करेलीं कि बड़हन पहाड़ खुख हो सकेला आ छोट पहाड़ में सोना के भण्डार मिलि सकेला।

भोजपुरी एगो लोकभाषा ह। लोकभाषा पर पानी के छींटा नाहीं दियाला। ओकरे भीतर एगो निर्मल झरना हमेशा बहत रहेला। झरना आपन पाट आ रास्ता खुदे बना लेला। बनल बनावल पाट आ रास्ता के जरूरत नहर के होला। व्याकरण उहे पाट ह। अउरी भाषा व्याकरण के अधीन होली, भोजपुरी के अधीन व्याकरण बा। ई भोजपुरी के शक्ति ह। एही से ई घामे में पत्ता के तरह से चलेले, बिना कवनो छाता आ परिभाषा के। मनुष्य के राग-चेतना में समूचा चराचर के ध्वनित करे वाली भाषा लोक के कण्ठ से गावेले आ अइसन गावेले कि ओमें पूरा ऋतुचक्र उतरि आवेला। मनुष्य आ प्रकृति, जड़ आ चेतन, भूगोल आ इतिहास के बीच के दूरी ऊ पाटि देले। लोकभाषा में नदी, पर्वत, जंगल, पठार, प्रकृति संवेदना के अंग बन के आवेलें। भोजपुरी के परंपरा वाचिक हवे [illegible]न एह वाचन के एगो विशिष्ट शिल्प हवे — निरभिमान, निर्व्याज, निसर्गोद्भूत।

देश के लोकभाषन के विकास में हिन्दी के विकास के रहस्य छिपल बा। एह से हिन्दी के शब्द-संपदा निरंतर बढ़त जाई। हिन्दी के शक्ति लोकभाषन से मिलल बा। हिन्दी के सरोवर लोकभाषन के रस से भरल बा। लोकभाषा के बिंब लोक के समय आ भूगोल में अवस्थित होखेला, एसे ऊ सहज सम्प्रेषणीय होला। इनके विकास अवरुद्ध होई त हिन्दियो के विकास रुकि जाई। हिन्दी कमजोर होई, खण्ड-खण्ड होके बिखर जाई, राष्ट्रभाषा के सिंहासन से उतार देहल जाई- ई भयावह कल्पना ऊ लोग करेला जे हिन्दी आ लोकभाषन के अलगे क के देखेला। दुनों के विकास एक-दूसरे में निहित बा। लोकभाषन के विरोध से हिन्दी के रस सूखि जाई आ हिन्दी के विरोध से लोकभाषन के जवन विस्तृत आकाश मिलल बा ऊ खण्ड-खण्ड हो जाई। एसे दुनों एक-दूसरा से पूरक होके आगे बढ़ें त एमें दुनो के भला बा।

●●

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के पहिला अंक के विश्व भोजपुरी समाज जवने तरह से स्वागत कइलेस, ओकरे खातिर हमनीं के आभारी बानीं। कुछ लोगन के एह पर आपत्ति बा कि एमें हिन्दी के अनुवाद काहें छपल बा। एकर जबाब हवे कि अनुवाद त छपी। हमनीं के प्रतिबद्धता भोजपुरी के ओह पाठकन के प्रति बा जे भोजपुरी में संसार के श्रेष्ठ समकालीन साहित्य पढ़ल चाहत बाड़ें। पत्रिका के नीति बनावल गइल बा कि भोजपुरी के पाठकन के भोजपुरी में बारी-बारी से अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी, अफ्रीकी आ लातिन अमेरीकी भाषन के श्रेष्ठ साहित्य उपलब्ध करावल जाय, हिन्दी आ अउर भारतीय भाषन के साहित्य के अनुवाद देहल जाय, साहित्येतर विषयन जइसे दर्शन, समाजशास्त्र, नृ-शास्त्र, विज्ञान आदि पर गंभीर

सम्पादकीय

चीन के महान् आचार्य कनफ्यूशियस से एकबेर एगो शिष्य पूछलस कि हमनीं के राज्य-व्यवस्था आ समाज-व्यवस्था कइसे सुधरी? 'शब्दन के सही प्रयोग से'—उत्तर मिलल शिष्य चकराइल कि एकरि का मतलब भइल? आचार्य समझवलन कि जब तू माई शब्द कहेलऽ, त ओकर अर्थ माइये होखे के चाहीं। माई जब ओकर अर्थ होइ त ई समझि ल कि ओका प्रति तू कृतज्ञभाव रखबऽ आ इ सोचबऽ कि ऊ तुहके पललसि-पोसलसि, अपने उपास कके तुहके खिवलसि, बड़हन कइलसि। जब तू इ समझब त ओकरे प्रति आपन कर्तव्यो तुहके इयाद आइ।' भाषा हमके पाल पोसि के बड़हन करेले, सभ्य बनावेले आ वृहत्तर समाज से जोड़ेले। ओकर प्रति हमनीं के आपन कर्तव्य इयाद बा? हमनीं के इ देखे के चाहीं कि ओकरे घर-अँगना में अइसन ऊँच दीवार न खड़ा हों जा जवन हमार घर बाँट-बूट के ओके क्षुद्र आ छोटहन बना दे। नयकी-नयकी प्रवृत्ति अपने बल-वेग से बहत कवनो बालू के बंजर टीला में हेरा न जाय। भोजपुरी के कइगो रूप बा। थोर-बहुत अन्तर स्वाभाविके बा। जरूरत एह बात के बा कि कुल्ही धारा मिलि के रस के सागर बने।

भोजपुरी में एतना श्रेष्ठ साहित्य लिखल गइल बा, संत साहित्य आ लोक-साहित्य के एतना लमहर परम्परा बा तब्बो ओके ऊ जगह काहे ना मिलल जवन ओके मिले के चाहीं? लोक, लोकभाषा, लोकमन, लोकरुचि, लोककला, लोक-संस्कृति पर बड़हन-बड़हन सेमिनार होत बा, विद्वान् लोग विदेश घूमत बानऽ आ अंग्रेजी के जाँता चला के जँतसार गावत बा। आपन भाषा से हमनीं के उखड़त जात बानीं। भोजपुरी समार के एतना देश में बोलल जाले, हम नाहीं बोलब त का होइ। एकर बढ़ोत्तरी होखे चांही बाकिर अपना घरे के बहिरे। पाँच सितारा होटल में रेस्त्रां के नाम होला 'मचान' 'झोपड़ी' आ व्यंजन के 'हाँड़ी चिकेन'। अइसने कुछु लोग भोजपुरी के पाँच सितारा मुक्ति में लागल बानऽ।

तमिल में 'मणिमेखलै' नाव के पुरान महाकाव्य बहुते प्रसिद्ध हवे। ओमे आपुत्रन के कथा बाटे। आपुत्रन काशी के एगो ब्राह्मण के पुत्र रहलन। गर्भ में रहलन तब्बे ओनके पिता ओनकी माता के त्याग दिहलेरू। दुःख ब्राह्मणी कन्याकुमारी के दर्शन खातिर निकल पड़लीं। दक्षिण के एगो नगर के आगे खेत में आपुनन के जन्म भइल। घर से दुत्कारल स्त्री अपने नवजात पुत्र के खेत में भगवान् भरोसे छोड़ि के आगे बढ़ि गइलीं। आपुत्रन के पालन-पोषण एगो निस्संतान दम्पति द्वारा होखे लागल। बड़हन होके आपुत्रन मदुरै के चिन्ता देवी के मंदिर में रहे लगलन आ माँग चुँग के पेट भरे लगलन। आपुत्रन के नियम रहे कि बिना केहू के खिलवले अपने भोजन नाहीं करें। दुसरा के कल्याण खाति घूमि-घूमि के भीख माँगे वाले आपुत्रन

से चिन्ता देवी प्रसन्न भइली आ प्रकट होके उनके एगो अक्षय पात्र देके कहली—'कुल धरती सूख जाय, अकाल पड़ि जाय लेकिन एह पात्र में भोजन के प्रवाह हमेशा बनल रही। लोग लेत लेत थकि जाइ, इ कब्बो खाली ना होइ।' श्रद्धा के साथे आपुत्रन अक्षय पात्र ग्रहण कइलें आ सबके सेवा में अपना के समर्पित कऽ दिहलें। इनके सेवा भाव देखि के इन्द्र के ईर्ष्या भइल। इन्द्रदेव एतना वर्षा कइलें कि धरती अन्न से भरि गइल। अब केहू के पास कवनो अभाव रहबे ना कइल त के आपुत्रन के सेवा ले? आपुत्रन के समस्या ई रहल कि बिना केहू के खियवले अपने कइसे भोजन करे? कुछ नाविक लोगन से सूचना मिलल कि सावक देश में अकाल पड़ल बा आ लोग भूख-प्यास से मरत बानऽ। आपुत्रन सावक जाये वाला एगो पोत पर सवार हो गइलन। बीच रस्ता में तूफान आ गइल। जहाज मणि पल्लव द्वीपि पर लंगर डालि देहलस। आपुत्रन द्वीप के शोभा देखे एक ओर गइलन तब्बे तूफान शांत हो गइल। नाविक जहाज लेके आगे बढ़ि गइलें आ आपुत्रन ओ बियाबान द्वीप में अकेले छूटि गइलें। निर्जन द्वीप। चिरई चुरुंग केहू के बास नाहीं। अक्षय पात्र आपुत्रन के पास रहे लेकिन बिना केहू के खियवले अपने कइसे खाय? आखिर में गोमुखी झील में अक्षय पात्र फेंकि के ऊ निराहार आपन प्राण त्याग दिहलन। भोजपुरी के पास अक्षय पात्र बा। मणिपल्लव द्वीप पर खड़ा होके उ सबके न्यौता देत बा लेकिन केहू लेवे के तैयार नाहीं बा—न अकादमी, न सरकार, न समाज, न लोग! सब इन्द्रदेव के माया से घिरल बाड़ें। एह माया से लड़े के पड़ी।

●●

कुछ तकनीकी आ व्यवस्था सम्बन्धी कारण 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के अक्टूबर-दिसम्बर अंक स्थगित करेके पड़ल हऽ। अपने पाठकन के विश्वास दियावत बानीं कि आगे से समय से राउर पत्रिका रउरे लगे पहुँची। हमार आ सम्पादक-मण्डल के राउर सहयोग वइसहीं मिलत रही एकर पूरा आसरा आ भरोसा बा।

प्रधान संपादक

सम्पादकीय...

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के एक बरिस पूरा भइल। कवनो पत्रिका के एक साल के जीवन अधिका ... होला बाकिर साहित्यिक पत्रकारिता का क्षेत्र में इहो लमहर बुझाला। अपना सीमा के भीतर एह एक बरिस ... हमनी से जवन हो पावल ओकर कुल्ही श्रेय हमरे पाठकन के बा जेसे मिले वाली सराहना से हमनी के ... बढ़ल आ ई भरम टूटल कि साहित्यिक पत्रिका के पाठक बहुते कम होलें, आ इहो कि भोजपुरी जाने-बोले ... आ ओसे प्यार करे वाला खाली पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पश्चिमी बिहार में बानऽ। करीब-करीब पूरा देश ... विदेश के कइगो देश से सम्पादकीय कार्यालय में आवे वाली चिट्ठिन से ई साफ हो गइल कि भोजपुरी कवनो ... देश-प्रदेश के भाषा न होके विश्व-भाषा ह आ एके जाने-समझे-बोले आ प्यार करे वाला सारे संसार ... फइलल बाड़ें। एह अवसर पर संसार भरके अपने पाठकन के हमनीं के ओर से आभार।

●●

भोजपुरी के श्रम, सौन्दर्य आ शौर्य के मिलल-जुलल रागिनी के अनुगूँज में अलगे-अलगे दूगो धारा देखल ... सकेला— कर्म के जीयत जागरूक उत्साह के आ भावमय चिन्तन के गझिन गम्भीरता के। ई चिन्तन, शक्ति ... में प्रतिष्ठित करे खातिर प्रेरित भइल बा, जबकि शौर्य, ओह शक्ति के प्रस्फुरित करे खातिर नियोजित ... बा। इहे प्रेरणा आ नियोजन जब मिलि जाला त बंजर धरती के सीना फोरि के ओमें सोना उगावे लागेला ... पसीना बहा-बहा के उजाड़-निर्जन द्वीप के नन्दन-कानन बना देला। ई दूसर बाति हउवे कि आजुदिन ... से मिलल ओह वरदान के सुधि हमनी के भुला गइल बा। गरदनतोड़ घुड़दौड़ में ओह प्रेरणा, ओह वरदान ... मन में कब्बो टीस नइखे उठत बाकिर घायल मन के भीतर उठत जवने ताप आ जवने अकुलाहट में ... के दउरे के कोशिश करत बानीं, ओमें एह बरदान के, संयम के आ शील के बहुते जरूरत बा।

●●

भोजपुरिया संस्कृति के सबसे बड़हन, सबसे असरदार आ सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व हउवे—प्रतिरोध। प्रतिरोधो ... संस्कृति होले। ऊ बोलबो करेले आ चुप्पो रहेले। भोजपुरियन के, रोजाना व्यवहार में एके देखल जा सकेला— ... अपना से, गैर से, सत्ता से, शक्ति से, व्यवस्था से। भोजपुरी में जेतना लोकोक्ति, मुहावरा, लोककथा, ... बा ओह सबके जनम प्रतिरोध के एही मनोविज्ञान से भइल बा। लोकमन तिलस्मी, जादुई आ भूत-प्रेत ... -लोक रचि के ओमें बहुते विचित्र आ सामान्य चरित्रन के सृष्टि करेला आ हमेशा बुराई पर अच्छाई ... व्यवस्था पर लोकशक्तिन के विजय के कामना करेला। जेकरे प्रति ओकरे मन में कुण्ठा के भाव बा, ... ऊ देवता होखे, राजा होखे, राक्षस होखे, नदी-पर्वत-समुद्र होखे—ओकरे प्रति ऊ प्रतिरोध के प्रतीक रचेला। ... भोजपुरी लोक-साहित्य के प्राण-तत्त्व हउवे। अपना भोजपुरी समाज में कइगो अइसन लोकगीत गावल ... जवने में मेहरारू राम के कोसेलीं, ओरहन देलीं कि तूं कइसन राम हउवऽ, भगवान हउवऽ कि दुसरा के ... पर सीता जइसन पत्नी के त्याग दिहलऽ। बियाह में गावल जाये वाली गारिन में सीता के पक्ष लेके राम ... पुरुष समाज के ओरहन दिहल जाला। एही तरह से जलुआ गीत मेहरारुन द्वारा अदमिन के समाज ... प्रतिरोध के एगो मुखर 'रूप' हउवे। नारी आ दलित के संस्कृति 'चुप्प के संस्कृति' कहल जाले, एसे ... प्रतिरोध के असंख्य अप्रत्यक्ष रूप मिलेला। प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष प्रतिरोध भोजपुरिया संस्कृति में भरल परल ... —कहीं ऊ बोलेला, कहीं चुप रहेला—बाकिर चुप्पो रहिके ऊ बोलला से ढेर बोलेला।

●●

एह अंक के कहानिन में ई प्रतिरोध हर जगह मिली। श्रेष्ठ साहित्य उहे होला जवन प्रतिरोध के साहित्य होला। मिलान कुंदेरा के कहनाम ह- 'शक्ति के खिलाफ आदमी के लड़ाई विस्मृति के खिलाफ स्मृति के लड़ाई ह।' भोजपुरिया समाज के हर कलारूप में लोकमन के प्रतिरोध हमेशा से सक्रिय रहल बा, आ अजुओ बा

●●

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के एह कहानी विशेषांक में रउरा सभे के कइगो बहुते बढ़िया कहानी पढ़े के मिली। वशिष्ठ मुनि ओझा के छोटहन टिप्पणी में भोजपुरी कहानी के दशा-दिशा पर विचार त कइले गइल बा, कुछ जरूरी सवालो उठावल बा। भोजपुरी भाषा के बल-बेंवत पर शुकदेव सिंह के लेख सोच-विचार आ चरचा खातिर कुछ एकदम नया बिन्दु उठवले बा। हमनीं के एह बाति के गर्व बा कि शिव प्रसाद सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, प्रतिमा वर्मा, पुष्पिता, आ राजेन्द्र किशोर शाही के पहिलकी भोजपुरी कहानी एह अंक में छपत बा। मूल भोजपुरी में लिखे के हमार अनुरोध मानि के ऊ लोग कहानी भेजल एकरे खातिर अपने पाठकन के ओर से हम ओ लोगन के धन्यवाद देत बानीं। 'धरोहर' में अबकी बेर आचार्य शिवपूजन सहाय, महेन्द्र शास्त्री, चतुरी चाचा आ रामेश्वर सिंह काश्यप (लोहा सिंह) के कहानी दीहल जात बा जवने के रचना-काल सन् '51 से '65 के बीच में फइलल बा। आचार्य शिवपूजन सहाय के कहानी 'कुंदन सिंह:केसर बाई' त उनका एकलौती भोजपुरी कहानी ह। एह अंक खातिर आइल कहानिन के चुनाव में हमनीं के ई प्रयास रहल कि हर पीढ़ी के लेखकन के प्रतिनिधि रचना एमें रहे। एही से जहँवा एमें वरिष्ठ लेखकन के रचना बा तहँवे एकदम नयकी पीढ़ियो के कहानी रउरा पढ़े के मिली।

●●

अपने लोग-समाज-गाँव-शहर-इतिहास-परम्परा-शक्ति-संघर्ष आ मन के ऊर्जा-जल से सींचल कहानिन के ई विशेषांक रउरा कइसन लागल, जरूर बतावल जाई। रउरा सभे के चिट्ठी के प्रतीक्षा रही।

●●

एह अंक से संपादक-मण्डल से श्रीमती सुखदा पाण्डेय बिदा लेत बाड़ी। उनकर सहयोग खातिर 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' हमेशा ऋणी रही। हमनीं के विश्वास बा कि रचनाकार के रूप में ओनकर सहयोग हमेशा मिलत रही। संपादक-मण्डल के नयका सदस्य के रूप में ब्रजेन्द्र त्रिपाठी आ प्रकाश उदय आ प्रतिनिधि के रूप में प्रेमप्रकाश पाण्डेय (नयी दिल्ली) आ बलभद्र (वाराणसी) के रउरा सभे के स्नेह मिली एकर विश्वास बा। एह अंक के कलात्मक मुद्रण में शिवकुमार निगम आ विश्वम्भर उपाध्याय के सहयोग ना मिलत त समय पर एकर प्रकाशन संभव ना हो पाइत। ब्रह्मदेव 'मधुर', चन्द्रभाल द्विवेदी के त ई पत्रिके हवे, ओ लोगन के धन्यवाद दीहल अपने पीठ ठोंकल होई।

●●

नेह-छोह बनवले रहीं। एह अंक पर आपन प्रतिक्रिया भेजीं।

प्रधान संपादक

सम्पादकीय

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के एक बरिस पूरा भइल। दुसरका साल के पहिला अंक अपने पाठकन के देत हमनी के प्रसन्नता आ संतोष के अनुभव होत बा। एक बरिस के जीवन कवनो लमहर जीवन ना होला बाकिर इहे एक साल हमनी के आत्मविश्वास से भरि देहले बा। लेखकन, पाठकन, विज्ञापनदाता आ सेतुन्यास के न्यासधारी लोगन के हम एह अवसर पर धन्यवाद करत बानी। एह सबके प्यार आ सहयोग के बिना एकर प्रकाशन संभवे ना होत।

•••

पछिला ११ से १३ अप्रैल तक नयी दिल्ली में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के दुसरका राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न भइल। भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ० शंकरदयाल शर्मा; राजस्थान, उत्तर प्रदेश आ हरियाणा के राज्यपाल सर्वश्री बलिराम भगत, रोमेश भण्डारी, महाबीर प्रसाद, आसाम आ तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल श्री भीष्मनारायण सिंह, भारत के पूर्व प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री के०एन० सिंह, इन्दिरा गांधी कला केन्द्र के अध्यक्ष डॉ० कपिला वात्स्यायन, संस्कृति सचिव श्री बी०पी० सिंह, विख्यात कलाकार श्री बिरजू महराज आदि के साथे देश भर के भोजपुरी प्रेमी, कवि साहित्यकार-कलाकार संस्कृतिकर्मी एमे भाग लेहलें आ अनेक विषयन पर चर्चा कके संवाद के स्थिति बनवलें। ११ अप्रैल के १२ बजे राति के देवगौड़ा सरकार के प्रति संसद में अविश्वास प्रस्ताव पास भइल आ १२ ता० के अधिवेशन के उद्घाटन होखे के रहल। दिल्ली के ओर पूरा देश के नजर लागल रहे आ, दिल्ली ? मौसम के साथे राजनीति के गर्मी से खउलत रहे। ओह भयानक समय में दिल्ली भोजपुरीमय हो गइल आ राजनीति के गुणा-भाग छोड़ि के अति महत्त्वपूर्ण लोगन के साथे-साथे सामान्यो जन ओमें पुरहर उत्साह से शामिल भइलन—एकर का कारण हो सकेला ?

•••

स्मृति के द्वारा अनुभव के न्योतले आ अनुभव के द्वारा स्मृति के दुआरि खटखटवले से प्रार्थना शुरू होले। एगो फ्रांसीसी लोककथा पहिले सुनल जाय। दूगो देवदूत आकाश में तारन से खेलत रहलें। अचानक ओमें से एगो आपन छड़ी एतना जोर से फटकरलस कि दूगो तारा लुढ़कि के धरती पर गिर परलें आ अन्हारे में बिला गइलें। दुसरकी रात के भगवान जब तारन के गिनलन त दूगो तारा कम रहल। देवदूतन के बोला के पूछल गइल त देवदूत आपन गलती स्वीकार कइलस। ओके दण्ड दियाइल कि जबले दूनो तारा मिलि नइखे जात तबले ओके नक्षत्र-लोक में ना आवे दीहल जाई। कई साल बीति गइल। नगर-गाँव-पहाड़, झरना, वन, नदी, समुद्र हर जगह खोजल गइल बाकी दूनो तारन के पता ना चलल। एक दिन थकल-मांदले एगो नगर के गली से ऊ देवदूत जात रहल कि एगो मकाने के भीतर एगो बहुत सुन्दर लड़की एगो आदमी के साथे बइठ के वीणा बजावत रहे। अचानके लड़की के नजर उठल आ देवदूत के पैर रुक गइल। लड़की के दूनो आँखिन में दूनो हेराइल तारा चमकत रहलन। देवदूत दउर के भीतर गइल आ लड़की से कहलस कि कइ साल से जवन दूनो तारा हम खोजत बानी ऊ तोहरे दूनो आँखिन में चमकत बानऽ, एके वापस क द। लड़की हँसल आ पूछलस कि तोहरे पुरहर विश्वास बा कि हमरे आँखिन में ऊहे तारा चमकत बा ? देवदूत ओके ध्यान से देखलस आ ठण्डा साँस खींच के कहलस—'हमके क्षमा क द। हमसे गल्ती हो गइल। हमार दूनो तारा चमकत त रहलन बाकिर ओतना नाहीं, जेतना, तोहरे अँखिया में चमकत बानऽ।' एतना कहिके देवदूत चुपचाप चलि गइल। ओह लड़की के साथे बइठल ओकर पति कहलस—'ऊ कवनो पागले रहल। तोहरे आँखिन में हेराइल तारा खोजत रहे।' लड़की बोलल—देवदूत ठीक कहत रहे। कइ साल पहिले हम बइठल रहलीं त खिड़की के रास्ते दूगो तारा अइलन आ चुपचाप हमरी आँखिन में समा गइलें।' 'लेकिन ऊ त कहत रहे कि तारन से ढेर चमक तुहरे आँखिन में बा।' लड़की बोललस—'शायद एह खातिर कि जब ऊ हमरे आँखिन के देखत रहे तब हम ओह घड़ी के इयाद करत रहली जब तोहसे पहिलका बेर हमार प्रेम भइल।' लड़की के आँखिन में देवदूत जवन देखलस ऊ बाहरी संसार के यथार्थ रहे आ अपना स्मृति में जवने क्षण के इयाद करत रहे ऊ रचना के सत्य रहे—बाहर के यथार्थ से ढेर उज्जर, गतिमान आ चमकीला। दिल्ली के मावलंकर हॉल में हजारन आँखिन में जवन हजारन तारा चमकत रहलन ओमें भाषा के सत्य, रचना के सत्य आ भोजपुरिया संवेदना के सत्य—उल्लास, संतोष आ संकल्प बनिके चमकत रहे।

●●●

हिन्दी के बड़हन आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा के बुझाइल कि भोजपुरी के ई अधिवेशन हिन्दी के कमजोर करे खातिर होत बा। 'जनसत्ता' में छपल एगो लेखो में इहे बाति कहल गइल। भोजपुरी के विकास से हिन्दी कइसे कमजोर हो जाई ? हिन्दी एगो भाषा ना, कईगो भाषा के समूह हउवे। अवधी, ब्रज, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी, मगही आदि भाषा सभ के शक्ति लेके हिन्दी शक्तिशाली भइल बा। हिन्दी के महान साहित्य एही सब भाषा में लिखल गइल बा। हर भाषा के जइसे आपन इतिहास होला वइसे ओकर भूगोलो होला। ओकरे प्रतीकात्मक चरित्र के ओकरे प्राकृतिक परिवेश से अलग ना कइल जा सकेला। प्रकृति आ मनुष्य एगो समान ऊर्जा में साझा करेलें। इनकर अविभाज्य इकाई होला। बाकिर एह समाज में जहाँ आदमी आ प्रकृति दूगो विरोधी खाना में बँटि जालें त भाषा के ई रूपकात्मक एकता टूटि जाले। रूपक के जगही बुद्धि के प्रभुत्व भाषा पर हावी हो जाला। तब मनुष्य बिंब के स्थान पर बौद्धिक प्रत्यय के भाषा रचे लागेला। चिंतन आ कल्पना के परिपाटी आपन रूपकीय सत्ता खोके एक दूसरा से अलगे हो जाला—वइसे, जइसे पश्चिम के सब भाषन में हो गइल बा। तर्क आ विज्ञान के आक्रामक घेराबंदी के चलते मनुष्य के प्रकृति से संबंध लगभग टूटि जाला। उनइसवीं शताब्दी में भारतीय जन-मानस के जवन राष्ट्रीय भावना आलोकित कइले रहे, ओमें भाषा के एह रूपकात्मक बिंबन के सबसे गहिर योगदान रहल। भारतीय राष्ट्रीयता के भाषाई आ सांस्कृतिक धरोहर के बिल्कुल भुला दीहल, औपनिवेशिक विस्मृति के सबसे सजीव उदाहरण हउवे। विदेशी दासता से मुक्ति पावे के लालसा खाली राजनीतिक उद्देश्य से पैदा ना भइल रहे—ओकरे पीछे आपन सांस्कृतिक अस्मिता के विस्मृति के अंधकार से बाहर ले आवे के इच्छो रहे। एकरे एकदम उल्टा यूरोप के आधुनिक राष्ट्रीय सत्ता के आक्रामक अहंग्रस्त धारणा रहे जेकर स्थापना अनेक जाति, नस्ल आ जन-भाषा के नष्ट कइले के बादे संभव भइल। भारत के राष्ट्रीय चेतना अगर शुरु से आत्मकेन्द्रित संकीर्णता से मुक्त रहल त एकर कारण ई रहे कि ओके बलपूर्वक ऊपर से आरोपित ना कइल गइल रहे, ओकरे सांस्कृतिक परम्परा में ओकर संस्कार पहिले से मौजूद रहे। भारत के भाषा आ बोलिन में विभिन्नता भइले के बावजूद भीतर एकता के सूत्र मौजूद रहे। उनकर वैविध्ये उनके एगो खुलल आकाश देत रहे। एगो घर रहे, खिड़की अलग-अलग रहे जेसे भारतीय संस्कृति के अन्त:सूत्रन के देखल आ आँकल जा सकत रहे। भारत के राष्ट्रीय अस्मिता के यथार्थ अइसने भाषा सभन में रुपायित भइल बा जवने के डॉ० रामविलास शर्मा हिन्दी के ध्वंस के कोशिश मानत हउवें। समकालीन भोजपुरी साहित्य हिन्दी के विकास खातिर समर्पित बा, एह में कौनो सन्देह ना होखे के चाहीं। आदिवासी समाज के एगो गीत मन परत बा। ओकर अनुवाद कुछ एह तरह से हो सकेला—'हम सुत्ते लीं/निखहरे भुइयाँ/हम एसे सुत्ते लीं निखहरे भुइयाँ/कि हमार कान सटल रहे धरती से/जब राति सिराले/आ पेड़-पालो अदमी-जनावर चिरइ-चुरुंग सब चुप हो जालें/तब धरती काने में बतियावेले/हमके पुचकारे-दुलरावेले/आपन दुख-दर्द सुनावले/जेकर कान होले धरती से ऊपर/धरती ओसे कुछ ना कहेले/कब्बो ना कहेले।' भोजपुरियन के कान धरती से सटल रहेलें, एसे धरती के दुख-दर्द, पीड़ा-उल्लास, रंग-बेरंग सब एमें उतरि आइल बा। एमें प्रकाश आ छाया के सलवट बड़ा महीन बा आ एह दूनो के तालमेल जिन्दगी के चरम रहस्य हउवे। एह रहस्य के उहे जानि पाइ जेकर कान धरती से सटल बा।

●●●

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के निधन भोजपुरी खातिर एगो बड़हन आघात बा। लोक साहित्य के विश्व विख्यात विद्वान, भोजपुरी साहित्य के पहिलका इतिहास लेखक, लोकगीतन के संग्रहकर्ता आ 'पूर्ण मानुष'; डॉ० उपाध्याय के पूरा जीवन लोक साहित्य खातिर समर्पित रहे। भोजपुरी साहित्य के इतिहास के नया संस्करण तैयार कइले में एह समय उहाँ के लागल रहलीं। भोजपुरी-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशो पर काम चलत रहे तब्बे ई वज्रपात भइल। 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' पर उपाध्याय जी के असीम स्नेह रहे। एह अंक में डॉ० उपाध्याय पर श्रद्धांजलि के रूप में एगो लेख जात बा। भविष्य में उनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर अउरी सामग्री दीहल जाई। डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के विश्व भोजपुरी सम्मेलन आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

●●●

अगिला अंक से तीन गो नया स्तंभ शुरु होखे जात बा—'भोजपुरी जनपद' 'हमार गाँव' आ 'कहनी'। 'भोजपुरी जनपद' में बारी-बारी से हर जनपद आपन कहानी ललित रिपोर्ताज शैली में सुनावे जात बा। हमरे पाठकन खातिर अपने-अपने गाँव के संस्मरण लिखत बानऽ पं० विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, केदारनाथ सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, ज्ञानेन्द्रपति, सतीश त्रिपाठी आ अउरी बहुत से लेखक। त्यौहारन पर घर-अँगना में सुने-सुनावे वाली कहानी के स्तंभ हउवे—'कहनी'। हमनी के पूरा विश्वास बा कि हमार पाठक एह तीनो स्तम्भ के स्वागत करिहन।

●●●

आपन सुझाव आ प्रतिक्रिया लिखीं। चिट्ठी के प्रतीक्षा रही। नेह-छोह बनवले रहीं।

प्रधान संपादक

सम्पादकीय

'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के छठवाँ अंक अपने पाठकन के हाथ में देत के हमनी के जेतना खुशी होत बा ओतने ढेर संतोष एकर बा कि भोजपुरिया संस्कृति के सम्मान दियवले के अभियान में हजारन हाथन के बल आ ओही के संकल्प के साथ बा। आ, रोज ई बढ़ते जात बा। धारा बहत बा आ नदी के कुल्ही द्वीप टकटकी लगाके ओकरी ओर देखत् बानंऽ। अपना जड़ता के छोड़े के ऊ तइयार नइखन। लेकिन धारा के खिलाफ खड़ा होके, आपन काँस-कूस फेंकि के जे प्रवाह रोके के कोशिश करेला ऊ टूटि-टाट के ओमें बिला जाला। धारा कबो ना रुकेला।

जब पत्रिका के पहिला अंक निकलल त बुझाइल कि सेतु न्यास से गोहत्या के पाप हो गइल। अपने-अपने बड़ई मे से निकलि के भोजपुरी के कइगो चरवाहा सोंटा फटकारत खड़ा हो गइलन कि हमरी खरिहाने में ई लोग दंवरी कइसे करी? मुम्बई में रहिके सेतु न्यास के लोग भोजपुरी खातिर कुछ करे वाला के होला? अपना कमाई पर आफसेट से विश्व स्तर के रंगीन पत्रिका निकालेवाला ई लोग के होला? हमनी से बिना पुछले साहित्य के दुआर खटखटावे वाला ई लोग के होला? लोग लगल गिने कि एमें केतना ब्राह्मण बानंऽ—इहाँ त कवनो कूटनीटी बटुरल बा। हमनी के कब्बो सपना में नाहीं सोचले रहलीं कि साहित्यो में आरक्षण लागू हो गइल बा आ परीक्षण मिश्र, गणेश चौबे, कृष्णदेव उपाध्याय, मोती बी०ए० भोजपुरी साहित्य के चमकत सितारा नाहीं, बाम्हन हउवंऽ—विवेकी राय भूमिहार हउवंऽ, लोहा सिंह ठाकुर रहलें। इहो नाहीं मालूम रहे कि जातिभेद के सुलगत आगि में आपन रोटी सेंके वाला खाली राजनीतिए में ना साहित्यो में बानंऽ। भोजपुरिया संस्कृति के परवाह करे वाला के बा? भाषा, समाज आ लोकहित के ओर देखे के फुरसत केकरे लगे बा? सभे अपने दुकानदारी में लागल बा। राजनीति बदले ले त इहो लोग बदलि जाला। बिना रीढ़ के कायर लोगन के ई किर्तनिया जमात इतिहास के गति में आपन योग कब्बो ना पहिचान पावेले। सोच-विचार में असमर्थ आ बढ़हन सुविधाजीवी एह लोगन के, भाषा के ताकत पहिचाने भा पहिचनावे में कवनो भूमिका ना होला। शक्ति-सौन्दर्य के भाषा भइले के बावजूदो एकर उपेक्षा होत बा—एकरे खातिर एकजुट होके संघर्ष कइले में इनके कवनो रुचि नइखे। एमें कवनो शक नाहीं बा। केहू दूसर बेकति भा संस्था भा न्यास सामने आवत बा त ओकर साथिये लउर लेके रास्ता रोके के तइयार खड़ा बानंऽ।

जाति में भाषा के मुक्ति देखे वालन के बारे में कहल-सुनल बेकार बा। हमनी के ई जानेलीं कि जे अत्याचार, शोषण, दुर्नीति के पहिचान जगावेला, सामाजिक भेदभाव पर पूरा ताकत से प्रहार करेला, हर तरह से अन्याय से लड़े जाये के ललकारेला, जाति-भेद, अशिक्षा, अंधविश्वास से लड़े खातिर तइयार करेला, झूठ आ पाखण्ड के बर्फीला के सत्य के आँच से पिघलावेला, धधकत हिंसा के विरोध करेला, लोक के धरती पर खड़ा होके लोक-मंगल के सपना देखेला, आसमान माथे पर लपेट के धरती के जियेला—ओकर कवनो जाति ना होला। ऊ हीरा डोम होखें चाहे महेन्दर मिसिर, तेग अली तेग होखें चाहे बिरहिया बिसराम, मोती बी०ए० होखें चाहे रामजियावन दास बावला, ब्रूस जान ग्राहम होखें चाहे तैयब हुसैन पीड़ित, चन्द्रदेव यादव होखें चाहे सत्यदेव त्रिपाठी—इनके एक्के धर्म ह एक्के सम्प्रदाय ह, एक्के जाति ह—साहित्यकार के जाति।

सेतुन्यास कहाँ से पत्रिका निकालत बा, विज्ञापन बटोरत बा, बड़हन-बड़हन सम्मेलन करावत बा—एह लोगन के देश से पइसा मिलत बा कि विदेश से—एमे केतना बाभन बानऽ, केतना ठाकुर—सेतु न्यास के खिलाफ 'प्रथम सूचना' कवनो मामला बनत बाटे कि नाहीं—ई कुल गिनती छोड़ि के एकजुट होके लड़ले के कार बा, भोजपुरी के ताकत देखवले के कार बा, एकर अस्मिता बचावे खातिर अपना के झोंकि देहले के कार बा। ई कब होई?

•••

एह अंक से तीन गो नया स्तंभ शुरू होत बा—हमार गाँव, भोजपुरी जनपद अउर कहनी । पण्डित विद्यानिवास मिश्र के अपने गाँव पकड़डीहा के संस्मरण एह अंक के उपलब्धि हउवे । बलभद्र भोजपुरी जनपद भोजपुर के कहनी सुनावत बानऽ । माधुरी शुक्ल कहनी में सतमहुल व्रत के कथा सुना रहल बाड़ी । भोजपुरी के तथागत दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती पर वशिष्ठ के टिप्पणी आ स्वामीजी के चुनल रचना अपने पाठकन के विशेष उपहार के रूप में हमनी के देत बानी । मराठी के कबीर नारायण सुर्वे के चुनल कविता पाठकन के एगो नया दुनिया में ले जाई ।

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति खातिर अक्टूबर-नवम्बर के महीना बहुत खराब रहल । पहिले रासबिहारी पाण्डेय जी के देहान्त भइल ओकरे बाद पं० धरीक्षण मिश्र अउरी पं० गणेश चौबेजी पंचतत्व में विलीन भइल । एह तीनों के आशीर्वाद हमनी के हमेशा मिलत रहे । जे जीवन के प्यार करेला, ओकरे मट्टी में तप के कुंदन अइसन चमकेला, आपन रस सबके बाँटेला, मृत्यु ओही के पीछे परेले । तीनो के पार्थिव शरीर अब नाहीं बा लेकिन अपने अक्षर-देह में ई लोग हरदम जीवित रही । एह अंक में श्री रासविहारी पाण्डेय पर श्री अक्षयवर दीक्षित के श्रद्धांजलि देत जात बा, अगिला अंक में पं० धरीक्षण मिश्र आ पं० गणेश चौबे पर विशेष सामग्री रही । तीनों के स्मृति में 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के प्रणाम ।

रउरे चिट्ठी के प्रतीक्षा रही । नेह-छोह बनवले रहीं ।

प्रधान संपादक

नया साल के बधाई

बासल बयार ऋतुराज क सनेस देत
गोरकी चननिया क अँचरा गुलाल हो
खेत-खरिहान में सिवान भर दाना-दाना
चिरई के पुतवो न कतहूँ कँगाल हो
हरियर धनिया चटनिया टमटरा क
मटरा के छेमिया के गदगर दाल हो
नया-नया भात हो सनेहिया के बात हो
एही बिधि शुभ-शुभ-शुभ नया साल हो

रामजियावनदास बा

□ कविता

□ अरुणेश नीरन

हम गये थे कविता के पास
अपनी उदासियाँ देने
लेकिन पहले से-ही उदास थी वह

भर गया था
झील जैसा उसका हृदय

रुका हुआ था हवा का प्रवाह

बुझ चुकी थी वह आग
जिसने असंख्य दियों को जलाया था
और अनगिनत साम्राज्यों को
राख में बदल दिया था

सूख गया था
सारा का सारा जल
जिससे फूटते थे अँखुए
और वृक्ष बन पृथ्वी को
छाया से ढँक लेते थे

सबसे आश्चर्य तो यह था
टूट गये थे सारे क्षितिज और
आकाश कहीं था ही नहीं
जिसमें कभी सृष्टि की तरह रहती थी कविता

सारे रंग गायब हो गये थे
पृथ्वी के
अब सिर्फ सूचनाएँ लिखी जा सकती थी उस पर

होने की रहने की
कहने की सुनने की

पुरवा पछुआ के सहने की
नदी-सदी के बहने की

घुटनों के मुड़ने की
हाथ-पाँव टूटने की

→

गिर-गिर कर उठने की
उठ-उठ कर गिरने की

जलते हुए वनों की
मरते हुए मनों की

लोग अपनी उदासियाँ
टाँक देते थे
और चले जाते थे
नयी उदासियों के पास

सब भरा हुआ था
उदासियों के स्मृति-लेख से

वहाँ समस्यायें थीं समाधान थे
आदि था अंत था

लेकिन
कविता की बूँद-बावड़ी में
न वसंत था
न अनन्त था !

□□

□ दिनकर का संस्कृति-चिन्तन

o अरुणेश नीरन

शब्द जब अनुवाद बनते हैं तब अपना मूल अर्थ खो बैठते हैं। संस्कृति शब्द 'कल्चर' का अनुवाद है। पहले संस्कृति के स्थान पर धर्म का प्रयोग होता था। दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' के द्वारा भारत नहीं, भारत-धर्म की खोज की है। संस्कृति को आचार्य नरेन्द्रदेव ने 'मानव-चित्त की खेती' कहते थे। जैसे खेत वही रहता है लेकिन हर फसल के बाद उसकी जुताई होती है। ऊपर की अनुर्वर हो चुकी परत नीचे जाती है और नीचे की परत अपनी सम्पूर्ण उर्वरता के साथ ऊपर आती रहती है जिससे खेत नया-नया होता रहता है। संस्कृति खेत की तरह-ही हमेशा पुनर्नवा होती है। कभी कभी संस्कृतियों में संघात भी होता है। यह दो प्रकार से होता है। दो विकसित संस्कृतियों का संघात और एक विकसित और दूसरी निर्बल संस्कृति का संघात। विकसित संस्कृतियाँ जब टकराती हैं तो प्रायः दोनों की विशेषताएँ आत्मरक्षा के प्रयास में अधिक उभरती हैं। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतीय पुनर्जागरण का इतिहास इसका प्रमाण है। सबल और निर्बल संस्कृतियों में जब टकराव होता है तो दो-ही प्रक्रियाएँ संभव हैं, या तो निर्बल संस्कृति पूर्णतया विलीन हो जाती है या वह अपने परीक्षित मूल्यों को विकसित संस्कृति के मूल्यों के अधीन करके एक नया मूल्य-स्तर बना लेती है। दोनों ही दशाओं में काल का महत्त्व है क्योंकि बिना लंबी प्रक्रिया से गुजरे मूल्य-स्तर का निश्चित रूप नहीं बन पाता। यह भी सच है कि सबलता और निर्बलता सैनिक या राजनीतिक शक्ति के आधार पर निर्धारित नहीं की जा सकती है। आर्थिक और सांस्कृतिक शक्तियाँ इसका आधार तो बनती ही हैं, सबसे बड़ा आधार बनता है— प्रतिरोध। यही कारण है कि बहुत-सी विजेता संस्कृतियाँ विजित संस्कृतियों द्वारा विजित हो गयी हैं। लेकिन संस्कृति में यह निहित है कि कोई न कोई उसकी एक पीढ़ी से आने वाली एक प्रवाह-रेखा है और उसकी कोई न कोई संभावना है, जो आगे की ओर जायेगी।

इस दृष्टि से अपने देश से संस्कृति अलग नहीं हो सकती। दिनकर भारत की इसी संस्कृति या इस धर्म की खोज करते हैं जो 'भारत धर्म' है।